

बलूचस्तान में वरिध प्रदर्शन

प्रलिम्स के लयि:

चीन-पाकस्तान आर्थिक गलयिरे, बलूचस्तान, ईरान, अफगानस्तान

मेन्स के लयि:

बलूचस्तान में चीन-पाकस्तान आर्थिक गलयिरे से संबधति परयोजनाओं के वरिध का कारण

चर्चा में क्यों?

पछिले कुछ हफ्तों में [चीन-पाकस्तान आर्थिक गलयिरे](#) के हसिसे के रूप में बंदरगाह शहर की मेगा वकिस योजनाओं के खलिफ [ग्वादर](#), बलूचस्तान में लगातार वरिध प्रदर्शन हुए हैं।

- प्रदर्शनकारयिों ने बंदरगाह के वकिस में स्थानीय लोगों के हाशयि पर जाने की ओर ध्यान आकर्षति करने की मांग की है।
- पाकस्तान का दावा है कभारत इन वरिध प्रदर्शनों का समर्थन करता रहा है।



प्रमुख बदि

- **बलूचस्तान:**
 - बलूचस्तान पाकस्तान के चार प्रांतों में से एक है।
 - यह सबसे कम आबादी वाला प्रांत है, भले ही यह कषेत्रफल के आधार पर सबसे बड़ा प्रांत है।
 - यह जातीय बलूच लोग यहाँ के नविसी हैं जो आधुनकि ईरान और अफगानस्तान में भी पाये जाते हैं, हालाँकि बलूच आबादी बलूचस्तान में पाई जाती है।
 - बलूचस्तान प्राकृतिक गैस और तेल से समृद्ध है और पाकस्तान के सबसे महत्त्वपूर्ण कषेत्रों में से एक है।
- **बलूचस्तान में वदिरोह:**

- भारतीय उपमहाद्वीप से अंगरेजों की वापसी के दौरान, बलूचस्तान साम्राज्य को भारत में शामिल होने, पाकस्तान में शामिल होने या स्वतंत्र रहने की पेशकश की गई थी।
- बलूचस्तान के राजा ने स्वतंत्र रहना चुना और यह लगभग एक वर्ष तक स्वतंत्र रहा।
- वर्ष 1948 में पाकस्तान सरकार ने सैन्य और कूटनीतिक संयोजन के साथ इस क्षेत्र पर नियंत्रण कर लिया और इसे पाकस्तान का हिस्सा बना दिया।
- पाकस्तान सेना और आतंकवादी समूहों द्वारा किये गए क्षेत्र में विकास और मानवाधिकारों के उल्लंघन की कमी के कारण, बलूचस्तान में यह विद्रोह वर्ष 1948 से सक्रिय है।
- पाकस्तान का दावा है कि भारत इन विद्रोही लड़ाकों को हथियारों और खुफिया जानकारी के माध्यम से समर्थन प्रदान करता रहा है।

■ बलूचस्तान पर भारत का रुख:

- भारत ने लंबे समय से पाकस्तान या किसी अन्य देश के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप न करने का राजनीतिक रुख बनाए रखा है।
- वर्षों से पाकस्तान द्वारा बार-बार कश्मीर मुद्दे को उठाने के बावजूद, भारत ने बलूचस्तान पर चुप्पी बनाए रखी थी।
- हालाँकि, वर्ष 2016 में पाकस्तान में स्वतंत्रता दिवस समारोह के तत्काल बाद बलूचस्तान पर भारत की टिप्पणी आई, क्योंकि यह समारोह कश्मीर की स्वतंत्रता हेतु समर्पित था।
- भारत के प्रधानमंत्री ने वर्ष 2016 में अपने स्वतंत्रता भाषण में बलूच लोगों के अत्याचारों का जिक्र किया था।

‘चीन-पाकस्तान आर्थिक गलियारा’ और भारत की चिंताएँ

■ चीन-पाकस्तान आर्थिक गलियारा

- ‘चीन-पाकस्तान आर्थिक गलियारा’ पाकस्तान और चीन के बीच एक द्विपक्षीय परियोजना है।
- इसका उद्देश्य चीन के पश्चिमी भाग (शनिजियांग प्रांत) को पाकस्तान के उत्तरी भागों में खुंजेराब दर्रे के माध्यम से बलूचस्तान, पाकस्तान में ग्वादर बंदरगाह से जोड़ना है।
- इसका उद्देश्य ऊर्जा, औद्योगिक और अन्य बुनियादी ढाँचा विकास परियोजनाओं के साथ राजमार्गों, रेलवे और पाइपलाइनों के नेटवर्क के साथ पूरे पाकस्तान में कनेक्टिविटी को बढ़ावा देना है।
- यह ग्वादर पोर्ट से चीन के लिये मध्य पूर्व और अफ्रीका तक पहुँचने का मार्ग प्रशस्त करेगा, जिससे चीन हृदि महासागर तक पहुँच सकेगा।
- CPEC ‘बेल्ट एंड रोड’ (BRI) इनिशिएटिव का एक हिस्सा है।
 - वर्ष 2013 में शुरू किए गए BRI का उद्देश्य दक्षिण पूर्व एशिया, मध्य एशिया, खाड़ी क्षेत्र, अफ्रीका और यूरोप को भूमि तथा समुद्री मार्गों के नेटवर्क से जोड़ना है।

■ भारत के लिये चिंता:

- **संप्रभुता का मुद्दा:** चीन द्वारा पाकस्तान के लिये विकसित किये जा रहे कुछ प्रस्तावित बुनियादी ढाँचे में **सेपाकस्तान अधिकृत कश्मीर (POK)** के विवादित क्षेत्र रहे हैं।
 - भारत इसे अपने क्षेत्र का हिस्सा मानता है।
- **ग्वादर बंदरगाह का दोहरा उद्देश्य:** भारत ग्वादर को लेकर चिंतित रहा है, जो चीन को अरब सागर और हृदि महासागर तक रणनीतिक पहुँच प्रदान करता है।
 - इसे न केवल एक व्यापार गोदाम के रूप में बल्कि चीनी नौसेना द्वारा उपयोग के लिये दोहरे उद्देश्य वाले बंदरगाह के रूप में विकसित किया जा रहा है।
 - यह **स्ट्रैटिज ऑफ परल्स सिद्धांत** का हिस्सा है, जिसके तहत चीन हृदि महासागर और उसके दक्षिण में ग्वादर (पाकस्तान), चटगाँव (बांग्लादेश, क्याक फ्रू (म्याँमार) और हंबनटोटा (श्रीलंका) में अत्याधुनिक विशाल आधुनिक बंदरगाहों का निर्माण कर रहा है।
 - स्ट्रैटिज ऑफ परल्स भारत के लिये एक रणनीतिक खतरा है, क्योंकि इसका उद्देश्य हृदि महासागर में चीनी प्रभुत्व स्थापित करने हेतु भारत को घेरना है।

स्रोत: इंडियन एक्सप्रेस